तब शरीर के अंग भी विश्राम करते है। तब हम इन बातों से दूर रह पाते है। परन्तु कई बार शैतान नींद का भी इस्तेमाल बुराई की बातो के लिए करतर है बुरे सपने इत्यादी खैर इस वक्त हम इस विषय से अलग नही जाएगे। तात्पर्य सिर्फ इतना कि प्रभु चाहता है कि दोनो, दिन और रात का हम सदुपयोग करे क्योकि उन्हे परमेश्वर ही ने बनाया है।

"इसके बाद सांझ हुई फिर भोर हुआ।"

पृथ्वी का पहला दिन पहली दोपहर, पहली सांझ और पहली रात यही रही होगी। में सोचता हुँ क्यो प्रभु ने पहले दिन प्रकाश की सृष्टी की। वह सुखी भुमी या पेड–पौधे इत्यादि भी बना सकता था परन्तु यदि ऐसा होता तो शायद गिनती के लिए कोई माप दण्ड ही न मिलता। यह मालुम पढना भी मुश्किल हो जाता कि कोनसे दिन क्या बना था। क्योंकि दिन रात एक माप दण्ड का भी करते है इसी से हम अपनी या किसी भी वस्तु की आयु का पता लेते है। मे समझता हुँ कि परमेश्वर का ज्ञान जो मनुष्य की समझ से परे है और परमेश्वर ने पहले दिन प्रकाश ही को बनाया ताकि हम बाकी की सृष्टी या निर्मिती जो प्रभु ने कि उसे शुरू ही सें गिन सके अन्यथा यदि प्रभु तीसरे या चौथे दिन प्रकाश को बनाता तो पहले बनाई हुई निर्मिती को मनुष्य माप ही न पाता और उत्पति ही से गडबडी निर्माण हो जाती। लेकिन हमारा प्रभु जों उत्पति के पहले ही से था और वह जो कल, आज और युगानुयुग एकसा है, वह अलफा और ओमेगा है।वह है, था और रहेगा (प्रकाशितवाक्य 1:8,18) ऐसा प्रभु जानता है कि कब क्या करना है। वह समय का मालिक है। हर चीज का समय उसी ने नियुक्त किया हुआ है। बोने का, काटने का, बटोरने का, दिन और रात करने का। इसलिए उसने सबसे पहले प्रकाश को बनाया और सांझ हुई और एक माप दण्ड तैयार था ताकि हम गिन सके यही पहला दिन था। प्रभु इस पाठयकम –3 की पहली श्रृखला मे आपको आशिष दे।

आमीन

कविता

पास्टरांच्या वाढदिवसानिमित्त

योजना ती परमेश्वराची
अद्भूतरित्या साकारली
पित्याच्या गौरवनीशी
पुत्राची नियुक्ती झाली
.पित्याने जगावर केलेल्या प्रितीची तीच
एक साक्षी झाली.

हाच तो दिवस
जो येशूने दिला
आपल्या द्वारे पित्याच्या
नव्या योजनेचा प्रारंभ झाला.
करण्या उद्धार लोकांचा अध्यात्मिक
पित्याचा जन्म झाला.

जीवनाच्या मार्गाचे
मार्गदर्शक तुम्ही
भविष्यासाठीची प्रेरणा तुम्ही
निराश मनांचा उद्धार तुम्ही
वेगळे न काही पित्याची हुबेहुब
छावणीच जणू तुम्ही

प्रेमाचा अथांग सागर आहे मनी
चुकल्या क्षणी कोधही त्याच मनी
दयेच्या अंतः करणाने जींकले सर्व काही
शब्दही अपुरे पडतील वर्णताना महती
तुमची
धन्य तो पिता ज्याने केली आम्हावर
पित्याची या नियुक्ति

DISCIPLESHIP TRAINING CENTRE

Acts Foundation, Potter's House Church ,3rd Lane, Madhuban, Sangvi Pune- 27 Ph.9850833779 ;contact@actsministry.in

वाइबल स्कुल / Bible School

अंक:1 Course-3 July 2009 मुल्य:10 रू.

संपादकीय

प्रिय पाठको,

एक बार फिर से नासरी प्रभु यीशु मसीह के मधुर और जीवित नाम मे मैं आपका फिर से शिष्यत्व प्रशिक्षण केंद्र पाठयकम –3 मे मैं आपका स्वागत करता हुँ। मुझे आज वह समय याद आ रहा है जिन दिनो में परमेश्वर का वचन दुर्लभ था और दर्शन कम मिलता था।

(1 शमुएल 3:1) फिर भी ऐसे कठिण समय में परमेश्वर ने एक छोटे बालक शमुएल से बात कि

(1शमु 3:4) । तो आज हम तो आशिषीत है कि कम से कम इस युग, जिस मे हम जी रहे है और जीवन बिता रहे हैं वचन का आकाल को कतई नही हुआ है।और ना ही ऐसी बात है कि दर्शन भी नही मिल रहा तो हम क्यों कर प्रभु के उस वचन को जो सोने और कुन्दन से बढकर है और मधु से भी बढकर है (भजन 19:10) क्यों न पढे और अध्ययन करे। इन तिनों पाठयकमो के द्वारो मैं चाह रहा हुँ कि परमेश्वर के वचन की लम्बाई, गहराई, चौडाई और उँचाई को नापने की कोशिश करे।यह वह अद्भुत वचन है जिसकी उँचाई को जितना छुने की कोशिश करों वह उँची होती जाएगी। आइए हम इन पाठयकमो के द्वारा प्रभु के वचन को समझने की कोशिश करे। पाठयकम की इस श्रृंखला में हम बाइबल के हर किताबों को कमबध्द तरीके से एक के बाद एक उनके अध्यायों के अनुसार हम पढेंगे। बाइबल के हर किताबों को मेंने कुछ अध्यायों मे बांटा हैं।केवल एक या दो अध्याय से आप संपूर्ण पुस्तक को नही समझ सकते,परन्तु हर अध्याय को आप पढकर हर पुस्तक को और भी बहतर रीती से समझ सकते है। इस श्रृंखला में मेरी कोशिश यह रहेगी की पवित्र शास्त्र में छिपी हुई गहराई को बाहर निकालने की कोशिश करू। में हर एक विश्वासी भाई बहन को नासरी प्रभु यीशु के नाम में उत्तेजन देना चाहता हुँ कि आप प्रभु के वचन को अध्ययन करने के महत्व को आप समझे। यदि हम प्रभु यीशु से प्रेम करते है तो उसी प्रभु परमेश्वर के दिए हुए कलाम से भी प्रेम करेंगे। प्रभु आप को बुध्दी और ज्ञान दे। आमीन।

रेव्ह.विनय दुबे
संस्थापक और वरिष्ठ पास्टर

अध्याय – 1

विश्व की सृष्टी उत्पति 1,2

इस श्रृखंला के इस पहिले अंक मैं आपको पवित्र शास्त्र की पहली पुस्तक की तस्वीर दिखाना चाहता हुँ। उत्पति इस किताब के बारे में विस्तृत जानकारी में इस अंक में नही दे रहाँ हुँ। इस किताब कि अधिक जानकारी के लिए पाठयकम–1 बाइबल सर्वेक्षण का आप अध्ययन करें। इस पाठयकम के इस अंक में हम विश्व की सृष्टी के विषय हम समझेंगे।

(उत्पति1:1) के अनुसार "आदि में रमेश्वर न आकाश और पृथ्वी की सृष्टी ी"। वास्तव में इस पद पर कई लेखको टिप्पणीयॉ मौजुद है। जो कई विवादो ो खडा करते है,क्योंकि लिखा है,आदि में रमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टी ी और यह सृष्टी उन सातों दिनो में म्मलीत नही जो बाद में हुई अर्थात बाद दिनों में परमेश्वर ने जो भी निर्मिती की सने पहले ही आकाश और पृथ्वी मौजुद । इन्हे परमेश्वर ने 6 दिनो मे नही बनाया ल्कि उनका अस्तित्व पहले ही से था। वल दुसरे दिन (उत्प 6–8) और तीसरे दिन (उत्प 9–10) परमेश्वर ने इसे अलग किया और सुखी भुमी बनाई। और लिखा वचन 2 में कि यही पृथ्वी बेडोल और ुनसान पडी थी और गहरे जल के उपर न्धियारा था, तथा परमेश्वर का आत्मा ल के उपर मण्डलाता था।

कई बार हमारे जीवन में हमे कोई रूप ही होता। जीवन सुनसान और अन्धियारे भरा होता। मुश्किल और समस्याओं से म घिरे रहते और कभी भी उन तकलीफों र्द और दुःखो से उभर कर बाहर नही ाते,क्योंकी हमारे उपर परमेश्वर का ात्मा नही मण्डलाता है।इस वजह से मारा जीवन सुनसान और अन्धियारे मे ोता है परन्तु यदि परमेश्वर का आत्मा ापके उपर है उसकी उपस्थिती हमारे पर मण्डला रही है तो उम्मीद अब भी रकरार है।वह आपके बेडौल, सुनसान ौर अन्धरे जीवन को एक नया रूप देगा ौर उसे ज्योति से भर देगा। आदि मे रमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टी ी। परन्तु उस सृष्टी के बाद वह पहला दिन जब परमेश्वर ने प्रकाश बनाया और स अन्धियारे से अलग किया था उसके बीच कितनें सहस्त्र वर्ष लगे उसे कोई नही जानता। अब क्योकि यह में केवल हमारी बाइबल पाठशाला का ही अध्ययन आपको मे दे रहा हु तो उतनी गहराई का अध्ययन जो में हमारी बाइबल महाविद्यालय में दे रहा हुँ यह मुश्किल परन्तु में इतना ही कहना पसन्द करूँगा कि वैज्ञानिक पृथ्वी का कई करोड साल पुराने होने का दावा करती है। तो हमारी बाइबल उसकी पृष्टी करती है।आकाश और पुथ्वी की सृष्टी अज्ञात काल पहला दिन अब हम यह कह सकते है कि जिन 7 दिनो की चर्चा हम बचपन से सुनते आ रहे है और साथ ही यह भी मानते रहे है कि पृथ्वी 7 दिन में बनी परन्तु वास्तव में आकाश और पृथ्वी कों प्रभु ने इन 7 दिनो के पहले ही बनाया था।

सृष्टी के सात दिन

1.पहला दिनःप्रकाश(उत्पति1:3–5)

तब परमेश्वर ने कहा प्रकाश हो तो प्रकाश हो गया। आकाश और पृथ्वी की सृष्टी के बाद परमेश्वर ने पहले दिन जिस चिज की निर्मिती की वह था प्रकाश। इसका मतलब परमेश्वर ने कुछ भी इस सृष्टी मे बनाने से पहले सबसे अधिक जिस बात को महत्व दिया वह था प्रकाश। हम इस बात को भी नही भुल सकते कि आदि मे जब परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टी कि तब पृथ्वी पर जल के उपर केवल अन्धियारा था। और परमेश्वर ने अन्धियारे को हटाना चाहता था। प्रकाश को वास्तविकता मे लाना यही उत्पति का पहला कार्य था। यीशु मसीह ने भी कहा "जगत की ज्योति मैं हु, जो मेरे पीछे हो लेगा, वह अन्धकार मे न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा"। अन्धकार यह शैतान का प्रतीक है। यह पाप, निराशा, गुलामी और बिमारी इत्यादी को दर्शाता है और हमारा यीशु मसीह जो जगत की ज्योति है वह इस शैतान को मिटाता है। जब एक मनुष्य यीशु पर विश्वास रखता है तब उसके जीवन मे सबसे पहले जिस बात की उत्पति होनी चाहिए वह यह प्रकाश यानी यीशु के प्रभु पुरानी पाप की अन्धकार की बातो के मिटाते है और हमे नया जीवन देता है। (2 कुरिन्थियो 5:7) परमेश्वर का पहला कार्य जो किसी व्यक्ति मे जो है,वह है प्रकाश का उत्पन्न करना।

वचन 4 " और परमेश्वर ने प्रकाश को देखा कि अच्छा है, और परमेश्वर ने प्रकाश को अन्धियारे से अलग किया।" परमेश्वर ने प्रकाश को देखकर अच्छा कहा और यह कहकर उसने अन्धकार और प्रकाश का भेद कर दिया। अन्धकार और प्रकाश को देखकर उसने यह निर्णय लिया कि प्रकाश अच्छा है। हमारा परमेश्वर पवित्रता और पाप का भेद करनेवाला परमेश्वर है। वह सही और गलत में अन्तर लाता है। अच्छाई और बुराई का वह फरक बतलाता है। और उसके बाद उसने प्रकाश को अन्धियारे से अलग किया। हमारा परमेश्वर ना केवल, भेद या फरक करता है लेकिन वह अलग भी करता है। वह नही चाहता सत्य और असत्य, सही और गलत, अच्छाई और बुराई, धर्मी और अधर्मी, शुध्द और अशुध्द, विश्वासी और अविश्वासी का मूर्तियो के साथ परमेश्वर के मन्दिर का कोई मेल हो (2कुरिन्थियो 6:14–17) । इसलिए परमेश्वर ने प्रकाश को अन्धकार से अलग किया। हमे भी अन्धकार से निकलकर ज्योति मे चलना चाहिए। (इफिसियो 5:8) वचन 5 " और परमेश्वर ने प्रकाश का दिन और अन्धयारे को रात कहा। तथा सांझ हुई फिर भोर हुआ। इस प्रकार पहला दिन हो गया। कृपया अंग्रेजी भाषांतर kings James version पढिए (यशया 14:12)

अन्धकार यह शैतान का प्रतिक जरूर है परन्तु इसे भी परमेश्वर ही ने बनाया है। परमेश्वर ही ने प्रकाश को दिन यह नाम दिया और अन्धियारे को रात।शैतान लुसीफर भी परमेश्वर ही के साथ रहता था। (यशयाह 14:12) , परन्तु घमण्ड की वजह ने परमेश्वर ने उसे अपने आप से अलग कर दिया। रात और दिन यह दोनो ही परमेश्वर ही ने बनाए है। इसका यह भी अर्थ बनता है कि हमे अन्धियारें से अलग तो होना है। परन्तु इस अन्धियारे का सदुपयोग भी हमे करना है। हमें रात–दिन परमेश्वर की व्यवस्था पर ध्यान करना है (भजन 1:2) । परमेश्वर के कार्य को दिन ही दिन में करना क्योंकि वह रात आनेवाली हे जिसमे हम कोई भी काम नही कर सकते। (यूहन्ना 9:4) ।

मतलब दिन में हमे प्रभु का काम और रात मे विश्राम भी करना है। इस शरीर को परमेश्वर की सेवा के लिए हम जरूर इस्तेमाल कर रहे है परन्तु इसे विश्राम कि भी आवश्यकता है स्वंय यीशु मसीह ने अपने चेलो से यही बात कही जब वह प्रार्थना के लिए जाग न सके और सोने लगे तब यीशु ने कहा " आत्मा तो तैयार हे परन्तु शरीर दुर्बल है। (मत्ती 26:41)। इसका मतलब दिन मे प्रभु के कार्य को करने के बाद रात मे जब हमे काम नही करना है तब इस दुर्बल शरीर को विश्राम की आवश्यकता है। दुसरी बात यह भी प्रभु हमे सिखाता है कि जब आप जग रहे होते है गलत बातो को देखते, सुनते, सोचते और करते है।परन्तु जब हम विश्राम कर रहे है तब शरीर के अंग भी विश्राम करते